वैश्विक धरातल पर हिंदी की पत्र पत्रिकाएँ : दिशा एवं दशा

डॉ.भंडारे उद्धव
अध्यक्ष,हिंदी विभाग
चांगू काना ठाकूर कला,वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय ,नवी पनवेल

''खींचो न कमानों को ,न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो ,तो अखबार निकालो।।''

पत्रकारिता के प्रभाव को उजागर करनेवाली उक्त पंक्तियों ने हमेशा से ही मेरे मन को स्पर्श किया है।इस बात को नकारा भी नहीं जाता क्योंकि 21 वीं शती में नवीनतम संचार माध्यमों की कोई भी कमी नहीं है।समाचार माध्यमों की इन नवीनतम अधिकता के बाद भी समाचार पत्रों का स्थान कोई अन्य माध्यम नहीं ले सकता है।केवल एक सफ़ेद कागज़ और उसपर अचूक पेन की स्याही का असर बड़े बड़ों की बोलती बंद कर देता है।

पिछले कुछ सालों से हिंदी का वैश्विक स्तर विशाल से विशालतर होता चला जा रहा है।जैसे कि राष्ट्र संघ में हिंदी की स्थापना का प्रयास ,विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन आदि गतिविधियाँ हैं ,जिसके आधार पर हिंदी की क्षमता का सहज ही ज्ञान हो जाता है।आज हिंदी भाषा केवल भारत देश की भाषा न रहकर उसने बहुद्देशीय भाषा का रूप प्राप्त किया है।आज हिंदी भाषा विदेशों में लगभग तीस देशों में विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।यह अध्ययन अध्यापन का कार्य इस बात का प्रतीक है कि हिंदी भाषा केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं बल्कि वह मनुष्य हृदयों को जोड़नेवाली ऊर्जा है।हिंदी लेखन एवं प्रचार प्रसार दो रूपों में हो रहा है।प्रथम के अंतर्गत उन देशों का प्रादुर्भाव होता है जहाँ के लोग हिंदी को एक विश्व भाषा के रूप में "स्वांत : सुखाय" के लिए सीखते,पढ़ते-पढ़ाते हैं,निम्न प्रकार से हैं

रूस, अमेरिका, कॅनडा, इंग्लंड, जमनी, इटली, बेल्जियम, फ्रान्स, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, पोलैंड, ऑस्ट्रेलिया आदि हैं। और दूसरे के अंतर्गत उन देशों का समावेश होता है जहाँ भारत से गिरमिटिया के रूप में जानेवाले प्रवासी भारतीय लोग बड़ी तादाद में निकास करते हैं, जिनकी मातृभाषा हिंदी है वो देश निम्न प्रकार से हैं मॉरीशस ,फिजी ,गयाना , सूरीनाम ,फिनिया ,ट्रिनीडाड ,टुबैगो ,बर्मा , थायलैंड ,नेपाल,श्रीलंका ,मलेशिया ,दक्षिण अफ्रिका आदि।उक्त दोनों प्रकार के देशों में हिंदी का रचना संसार बहुत ही समृध्द है।भाषा और साहित्य की कोई भी भौगोलिक सीमा नहीं होती।इसी कारण हिंदी भाषा और साहित्य

'वसुधैव कुटुम्बकम्'के केंद्र में रखकर प्रसारित हो रही है।विश्व की इस महान भाषा के विकास के लिए विश्व के अनेक देशों में संचार माध्यम के रूप में पत्र पत्रिकाओं का सहयोग माध्यम के रूप में लिया जा रहा है।कई सालों से हिंदी विश्व के अने देशों में अपने अस्तित्व एवं महत्त्व का तिरंगा लहरा रही है।कई राष्ट्रों से हिंदी में प्रकाशित पत्र पत्रिकाएँ इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। पत्र पत्रिकाओं के विषय ,भार्षा शैली,संपादन कला की समीक्षा की जाए तो हिंदी की वैश्विक ताकत का पता चल सकता है।विदेशों में भी एक समय ऐसा था जो आज के जैसी मुद्रण एवं संपादन सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी।इसके बावजूद हिंदी के मनीषियों ने हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी के भविष्य को संकेतित किया था।हिंदी का सहास एवं उपयोगिता को बरकरार रखने में पत्र पत्रिकाओं ने बहुत बड़ा काम किया है।इसमें प्रमुख रूप से दैनिक ,साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, चौमाही, अर्धवार्षिक, वार्षिक, वार्षिक बुलेटिन, अवसर के अनुसार विशेषांक आदि समयानुसार हिंदी में प्रकाशित होते रहे हैं।उक्त लेख के माध्यम से मैं आज आपको वैश्विक पटल पर हिंदी के पत्र पत्रिकाओं की दशा और दिशा क्या है यह जानने की कोशिश करेंगे हूँ

मॉरीशस :

मॉरीशस यह देश हिंद महासागर में स्थित है।यह वह पहला देश है जहाँ दिसंबर 1834 को सबसे पहले प्रवासी भारतीयों के कदम पड़े।इसके उपरान्त प्रवासी भारतीय क्रमानुसार अलर्ग अलग देशों में प्रवेश किया।1845 त्रिनीडाड, 1860 द.अफ्रिका, 1870 गयाना, 1873 सूरीनाम, 1879 फीजी आदि में भारतीय मज़दूर गिरमिटिया बनकर पहुँच गये।मॉरीशस एक ऐसा राष्ट्र है जो सबसे पहले विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजन करने का मान प्राप्त है।इसके साथ ही इसी देश ने राष्ट्र संघ में हिंदी को स्थान दिलाने का प्रस्ताव सर्वप्रथम रख दिया।इस समय मॉरीशस में जन्मजात(नैसर्गिक)प्रतिभा और उत्पादजा प्रतिभाएँ एक साथ कार्यरत हैं।इस राष्ट्र ने अब ताक 54 हिंदी पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित करने का कीर्तिमान स्थापित किया है।मॉरीशस ही ऐसा देश है जहाँ पर अब तक दो बार हिंदी विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है। यहीं पर 'विश्व हिंदी सचिवालय' का प्रधान कार्यालय भी है।इसे 'मिनी भारत' भी कहा जाता है।इस देश में पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं संपादन का आरंभ 15 मार्च 1909 से 'हिंदुस्तानी पत्र' से हुआ।

निम्नलिखित पत्रिकाओं का संपादन एवं प्रकाशन कर मॉरीशस ने यह जता दिया है कि जहाँ पर विश्व के हिंदी प्रेमी हमेशा प्रेरणा ,शान्ति और उत्साह लेने के लिए खींचे चले आते हैं।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
मॉ	1.हिंदुस्तानी	प्रथम	15	साप्ताहि	सामाजिक	संपादक

रीशस		सं.डॉ.मणिलाल	मार्च 1909	क	राजनीतिक चेतना का उदय	भारत आने पर प्रकाशन बंद पहले साप्ताहिक फिर दैनिक के रूप में
	2.मॉरीशस आर्य पत्रिका	प्रथम सं.डॉ.मणिलाल पं.काशिनाथ किशटोटो	1911 1916	साप्ताहिक	आर्य समाज की शिक्षा के सार्थ साथ वैदिक धर्म को प्रधान स्थान	
	3.ओरिंटल गजैटज	श्री.रामलाल	1916	साप्ताहिक	प्रवासी भारतीयों के संबंध में प्रचुर सामग्री को छापना	
	4.मॉरीशस टाइम्स	इंडोमॉरीशस संघ के तत्वावधान में	1920	साप्ताहिक		
	5.मॉरीशस मित्र	श्री.गजाधर राजकुमार	1924	साप्ताहिक	सामाजिक सुधार तथा भ्रातृत्व भावना के लेख	
	6.आर्यवीर	प्रथम सं. पं.काशिनाथ किशटोटो	1929	साप्ताहिक (द्विभाषिक)	आर्य समाज के विचारों की बहुलता	
	7.सनातन धर्मांक	श्री.रामास्वामी नरसीमुलु (नरसिंहदास)	1933	साप्ताहिक (द्विभाषिक) पत्र	हिंदू धर्म और रीतिरिवाजों पर सामग्री	
	8.इंडयनकल चरल रिव्यू	प्रथम सं.डॉ.हजारीसिंह	1936		मॉरीशस के भारतवंशियों में सांस्कृतिक चेतना जागृत करना	

	9.वसंत	पं.गिरजानम उमाशंकर वर्तमान संपादक अभिमन्यू अनंत	1936	मासिक	पूर्ण साहित्यिकधारा इसमें नवोदित रचनाकारों को अधिक स्थान	विदेशी पत्रों में वसंत का स्थान सर्वो परि है।इसका स्तर भारतीय श्रेष्ठ पत्रों के समान ही है।
	10.जागृति		1939		1950 तक छपना रहा	
	11.मासिक चिट्ठी	पब्लिक रिलेशंस ऑफिस	1942	लघुपत्र	सूचनात्मक अधिक	
	12.आर्यवीर जागृति	प्रो.विष्णुदयाल वासुदेव	1945	दैनिक पत्र	‘	बंद हो गया
	13.जनता (संस्थापक चाचा रामगुलाम शिवसागर मॉरीशस के प्रथम प्रधानमंत्री)	प्रथम सं.श्री.जयनारायण राय वर्तमान सं.श्री.राजेंद्र अरूण	1948 1974	साप्ताहिक साप्ताहिक	साहित्यिक और हिंदी के लिए समर्पित भाव को महत्त्वपूर्ण स्थान मॉरीशस का सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक (द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन के समय इसने हिंदी प्रचार प्रसार के लिए उत्कृष्ट भूमिका निभाई)	मॉरीशस का सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक सामाजिक,सांस्कृतिक,राजनीतिक पत्र होने से जनप्रिय था।1982 में हो गया। पुनः प्रकाशन
	14.जमाना	विष्णुदयाल बंधु	1948		मॉरीशस के हिंदी लेखकों का सहयोगी पत्र था।इसमें अधिकतर हिंदी की रचनाओं को स्थान दिया	कभी कबार ही निकलता है।

					जाता था।	
	15.आर्योदय पहले आर्य वीर जागृति के नाम से छपता था।	आर्य सभा की ओर से प्रकाशित प्रथम सं.आत्माराम विश्वनाथ ,पं.मोहनलाल मोहित श्री.सत्यदेव प्रीतमजी	9नवम्बर 1950	पक्षिक बाद में मासिक	वैदिक धर्म और हिंदी की सेवा बड़ी निष्ठा से कर रहा है।	अब तक प्रकाशित हो रहा है।
	16.मॉरीशस इंडियन टाइम	संस्थापक श्री.आर.के.बुघन संपादक पं.राम अवध शर्मा	1909	दैनिक पत्र	तीन भाषाओं में प्रकाशित (अंग्रेजी,फ्रेंच,हिंदी)	
	17.मज़दूर	मॉरीशस आमाल गामटेड के तत्वावधान में	1953	दैनिक पत्र	प्रवासी भारतीयों के समाचारों को प्रमुखता से छापा जाता था।	
	18.नवजी वन	श्री.सूर्यकांत मंगर भगत श्री.रामलाल विक्रमसिंह	1959	पाक्षिक		
	19.अनुराग	प्रथम सं.पं.दौलत शर्मा प्रधान सं.सोमदत्त बखौरी	1960	त्रैमासिक पत्र	इसमें कविता,कहानी,नाटक, संस्मरण,भेंटवार्ता तथा निबंध को भरपूर स्थान साहित्यिक पत्र हिंदी परीषद का प्रमुख पत्र माना जाता है।	मॉरीशस का एक मात्र त्रैमासिक साहित्यिक पत्र है
	20.समाजवाद		1960			थोड़े दिनों बाद बंद
	21.कांग्रेस प्रकाश	हिंदू मॉरीशस कांग्रेस तथा	1964		मॉरीशस के प्रशिक्षणार्थियों	वार्षिक अंक के रूप में

		प्रशिक्षण महाविद्यालय सं.प्रो.रामप्रकाश T			की रचनाओं का आहुल्य होता है	आज प्रकाशित होता है
	22.आलसख T	हिंदी लेखक संघ के तत्वावधान में श्री.इंद्रदेवभोला इंद्रनाथ	1965 2006	आलपत्रि का सर्वप्रथम चौमाही	हिंदी लेखक संघ के तत्वावधान में सर्वप्रथम आलपत्रिका का प्रकाशन 50 वीं वर्षगाठ पर सन् 2011 पर इसका विशेष अंक	कुछ वर्षों के आद अंद हो गया इसी नाम से विशेषांक प्रकाशित
	23.आर्य समाज	श्री.मोहनलाल मोहित	1970	हीरक जयंती विशेषांक प्रकाशित	हिंदी भाषा को सुदृढ अनाना	
	24.जरनल वैदिक		1973		हिंदी भाषा को सुदृढ अनाना	
	25. 'आभा' 'दर्पण'	श्री.महेश रामजियावन (त्रियोले से)	1974	मासिक	साहित्यिक पत्र	'आभा' का कहानी विशेषांक पाठकों में काफी चर्चित रह चुका है
	26.शिवरात्रि	श्री.दयानंदलाल वसंतराय (द्वितीर T विश्व हिंदी सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष)		वार्षिक	हिंदी साहित्य को प्रचुर मात्रा में स्थान तथा संस्कृत शिक्षा के लिए कभी कभार अच्छे लेख प्रकाशित होते हैं।	यह पत्र आज भी अपनी गरिमा और गौरवमयी परंपरा के साथ प्रकाशित होता है।
	27.रणभेरी	हिंदी सरस्वती संघ (त्रियोले से)	1975	त्रैमासिक	त्रियोले के हिंदी रचनाकारों को विशेष रूप से	

					प्रोत्साहन देने का संकल्प	
	28.दुर्गा	श्री.सूर्य मंगर भगत	1935	साप्ताहिक	हस्तलिखित रूप में निकाला	1938 तक अस्तित्व में रहा।
	29.अनंत	पं.गिरजानंदजी श्री.अभिमन्यु अनंत सं.मंडर्ल डॉ.जोगीसिंह,पूजानंद नेमा,राज हीरामन	1930 1977	मासिक त्रैमासिक	विशुध्द साहित्यिक भारत में भी इसकी प्रतिक्षा रहती है	शीघ्र ही बंद हो गया हिंदी प्रेमियों के आग्रह पर पुनः प्रकाशित
	30.स्वदेश	ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट के तत्वावधान में प्रकाशित	1987	साप्ताहिक		1991 तक प्रकाशित
	31.भारतीय समाचार		1972	मासिक	भारत संबंधी समाचारों से ओतप्रोत	
	32.भारत दर्शन	भारत राज दूतावास से	1989	त्रैमासिक		1991 तक प्रकाशित
	33.आक्रोश	श्री.सत्यदेव टेंगर	1990	मासिक		
	34.इंद्रधनुष	इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद के द्वारा श्री.प्रल्हाद रामशरण	1988	त्रैमासिक		तीन भाषाओं में प्रकाशित (अंग्रेजी,फ्रेंच,हिंदी)
	35.मुक्ता	प्रकाशक/संपादक श्री.राजनारायण गति	1990		बालसाहित्य की दूसरी पत्रिका	1992 में बंद हो गया
	36.पंकज	प्रथम अंक का विमोचक डॉ.कामता कमलेश	1995	त्रैमासिक	छात्रोपयोगी पत्रिका	

		संपादक श्री. अजामिल माताबदल				
	37.सुमन	श्री.अजामिल माताबदल और श्री.राजनारायण गति	1999	मासिक	बच्चों की पत्रिका	
	38.जनवाणी	दिनेश गुंडोरी तथा श्रीमती सरिता बुधू		साप्ताहिक		अब यह पत्र बंद हो चुका है
	39.विश्व हिंदी समाचार	विश्व हिंदी सचिवालय		वार्षिक		
	40.विश्व हिंदी पत्रिका	श्रीमती पूनम जुनेजा/श्री.गंगा धरसिंह सुखलाल		वार्षिक		

इस प्रकार मॉरीशस में हिंदी पत्रों की एक लंबी पृष्ठ श्रृंखला समय के साथ निरंतर बढ़ती जा रही है,जो कि विश्व हिंदी साहित्य के लिए एक शुभ लक्षण है।

फिजी :

प्रशांत महासागर के मोती फिजी में भारतीयवंश के लोग श्रमिक कुली के रूप में लाए गए थे।उन्होंने अपनी ईमानदारी,निष्ठा,लगन से हिंदी को जिंदा रखने का महान काम किया।विश्व में सर्वाधिक हिंदी पत्र मॉरीशस से प्रकाशित होते हैं।उसके उपरान्त फिजी का नंबर आता है।जहाँ पर लगभग 35 हिंदी पत्र प्रकाशित होते हैं।फिजी से प्रथम पत्र का प्रकाशित होते हैं।फिजी से प्रथम पत्र का प्रकाशन सन् 1913 से प्रारंभ हुआ था।

देश	**पत्रिका का नाम**	**संपादक का नाम**	**सन्**	**प्रकार**	**दिशा**	**दशा**
फिजी	1.सेटलर	पं.शिवदत्त शर्मा देखरेख में डॉ.मणिलाल	1913	मासिक	हिंदी अनुवाद सायक्लोस्टाइल रूप में प्रकाशित	इसको लोगों ने भरपूर स्वागत किया।द्विभाषिक अंग्रेजी के साथ हिंदी के कुछ पृष्ठ प्रकाशित

	2.फिजी समाचार	प्रथम श्री.आशुराम सिंह अंतिम श्री.चंद्रदेव सिंह सं.सूर्य मुनिदयाल विदेशी	1923	साप्ताहिक		कुछ वर्षों तक प्रकाशित होकर बंद हो गया।
	3.भारतपुत्र					अधिक दिन तक न चल सका।
	4.बुद्धि					अधिक दिन तक न चल सका।
	5.बुद्धिवाणी					अधिक दिन तक न चल सका।
	6.वैदिक संदेश	श्री.कृष्ण शर्मा	1930 40 के मध्य	मासिक		दोनों पत्र पारस्पारिक आलोचना-प्रत्यालोचना का शिकार हुए और बंद हो गया
	7.सनातन धर्म	श्री.कृष्ण शर्मा	1930 40	मासिक		
	8.शांतिदूत	प्रथम संस्थापक संपादक पं.गुरूदयाल शर्मा अब संपादक श्री.जगनारायण शर्मा सहसंपादक श्रीमती.निर्मला पथिक	11 मई 1935	साप्ताहिक	फिजी का सर्वाधिक प्रसारवाला हिंदी पत्र साहित्यिक,राजनीतिक विषयों पर भरपूर सामग्री	11 मई 1935 से यथापन प्रकाशित हो रहा है

	9.किसान	पं.पी.डी.लक्ष्मण	1940			
	10.दीनबंधु	अखिल फिजी कृषक महासंघ के तत्वावधान में प्रकाशित			अखिल फिजी कृषक महासंघ के तत्वावधान में प्रकाशित	
	11.ज्ञान और तारा	श्री.ज्ञानी दास कबीरपंथी			हिंदी लेखन और साहित्य के अतिरिक्त फिजी में प्रवासी भारतीयों की दशा का चित्रण होता है।	
	12.पुस्तकालय	आर्य पुस्तकालय			हिंदी लेखन और साहित्य के अतिरिक्त फिजी में प्रवासी भारतीयों की दशा का चित्रण होता है।	फिर भी फिजी में हिंदी पत्रकारिता में इनका योगदान सराहनीय रहा।
	13.प्रवासिनी	श्री.काशीराम कुमुद				उक्त सभी पत्र अधिक दिनों तक प्रकाशित न रह सके और एक एक कर सभी बंद हो गए।
	14.प्रकाश	श्री.राम खेलावन				
	15.जंजाल					
	16.सनातन प्रकाश					दो चार अंकों के बाद अपने अस्तित्व की रक्षा न कर सके।
	17.मज़दूर विजय					
	18.जय फिजी	पं.कमलाप्रसाद मिश्र	1958 1960	साप्ताहिक	अति लोकप्रिय	आज तक प्रकाशित हो रहा है

	19.जागृति	श्रं.राम सिंह पं.राघवानंद शर्मा	1945	अर्द्ध साप्ताहिक बाद में साप्ताहिक	काफी लोकप्रियता प्राप्त की। किसानोए से संबंधित समाचार	प्रकाशन बंद
	20.आवाज़	ज्ञानीदास	1953	साप्ताहिक	राजनीतिक चेतना के स्वर अधिक	
	21.झंकार	ज्ञानीदास	1953	साप्ताहिक	सिने समाचारों का बाहुल्य होने से शीघ्र लोकप्रियता	1958 में बंद
	22.फिजी संदेश	के.जी.लाल मोरिस			स्थानीय लेखकों को बहुत प्रोत्साहन मिला	बंद हो गया
	23.किसान मित्र	नंदकिशोर	1982			
	24.सनातन संदेश उदयाचल	डॉ.विवेकानंद शर्मा	1982 1974	मासिक		
	25.राजदूत		1926		राजकीय बातों को ही प्रश्रय दिया जाता था।	
	26.फिजी वृत्तांत	सूचना मंत्रालय द्वारा			फिजी के जनजीवन की चर्चाएँ प्रधान रूप से होती थी।	
	27.शंख					
	28.फिजी समाचार	नटवरलाल गांधी				
	29.फिजी दर्शन	श्री.रामलोचन	1986	मासिक		
	30.विजय					
	31.प्रशांत समाचार			साप्ताहिक		बंद हो गया
	32.सरताज	श्रं.एस.एस.	1988	साप्ताहिक		

		दास		हक		
	33.साहित्य कार	राम नारायण गोविंद	1986			

इस प्रकार विश्व हिंदी पत्रकारिता में फिजी के हिंदी पत्रों की अविरल अनवरत चली आ रही है।

सूरीनाम :

दक्षिण अमेरिका में स्थित सूरीनाम एक ऐसा देश है जो भारतीय मज़दूरों के लिए उर्वरा भूमि के समान था। यहाँ पर प्रवासी भारतीयों की संख्या बड़ी मात्रा में है। हिंदी का अध्ययन एवं अध्यापन तथा भारतीय संस्कृति यहाँ की जनता के नस-नस में समाई है। इस प्रवासी भारतीय बहुत राष्ट्र में सर्वप्रथम 1964 से पत्र पत्रिकाओं का कार्य प्रारंभ माना जाता है।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
सूरीनाम	1.आर्य दिवाकर	आर्य समाज द्वारा प्रकाशित	1964		इसमें आर्य समाज से संबंधित सामग्री होती ही है पर कभी कभी हिंदी की विश्वजनीयता पर भी लेख लिखे जाते हैं।	यह पत्र आज भी अविरल प्रकाशित हो रहा है।
	2.सरस्वती	पं.शिवरतन	1964	मासिक लघु पत्र	पूर्ण साहित्यिक पत्र	यह लघु पत्र होते हुए भी अपनी सही भूमिका निभा रहा है।
	3.भारतोदय					आर्थिक तंगी के कारण बंद करना पड़ा।
	4.धर्म प्रकाश प्रेमसंदेश	डॉ.ज्ञानहंस 'अधीन' प्रेमानंद	1975	हिंदी और डच भाषा का मासिक पत्र	साहित्य की सभी विधाओं को स्थान मिलता था।	साइक्लो स्टाइल पद्धति से होता था।
	5.वैदिक	पं.शिवरतन	1975			अधिक दिनों तक

	संदेश					नहीं चल सके। 2 3 वर्षों तक ही चलता रहा। कुछ दिनों तक सर्वाधिक लोकप्रिय पत्र रहा।
	6.शांतिदूत	श्री.महातम सिंह		मासिक		बंद हो गया।
	7.सूरीनाम दर्पण	डॉ.कामता कमलेश निर्देशक/प्रेरणा सं.हरिदेव सहन तथा जानकी प्रसाद सिंह	1985			सायक्लो स्टाइल विधि से होता था। आज भी निकल रहा है।
	8.भाषा		1983	मासिक द्विमासिक	हिंदी और डच में निकला।	
	9.वसंत	अमर सिंह रमन कवि			निर्देशक/सलाहाकार डॉ.कामता कमलेश रहे।	यह सायक्ले स्टाइल इस प्रक्रिया में छपता था।
	10.भारत समाचार	भारत के दूतावास सूरीनाम		मासिक		
	11.प्रकाश	गांधी सांस्कृतिक भवन के शांतिदल द्वारा प्रकाशित		साप्ताहिक		
	12.विकास					

इस प्रकार हिंदी प्रेस के अभाव में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए सूरीनाम में हिंदी पत्रों का दीप जल रहा है।

गयाना :

गयाना को पहले 'ब्रिटिश गुयाना' नाम से जाना जाता था।यह देश भी दक्षिण अमेरिका में स्थित है।यहाँ पर भी काफी तादाद में प्रवासी भारतीय निवास करते हैं।हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति यहाँ के जन जीवन में फैली है।इस देश में सबसे पहले हिंदी पत्र का प्रकाशन एक रविवारीय परिशिष्ट के अंग के रूप में हुआ।यहाँ पर सर्वप्रथम अँग्रेज़ी दैनिक "आग्रोसी" पत्र के रविवार के अंक में एक पृष्ठ हिंदी का होता था।यहाँ पर आज आर्य समाज के सहयोग से 'आर्य ज्योति'और धर्म द्वारा 'अमर ज्योति'पत्रिकाओं का प्रकाशन निरंतर जारी है।पं.योगिराज शर्मा के संपादन 'ज्ञानदा' मासिक पत्र का भी संपादन कई वर्षों तक चलता रहा,लेकिन बाद में बंद हो गया।

1.आग्रोसी (दिशा) इसमें धार्मिक एवं सामाजिक समाचार प्रकाशित होते थे । (दशा)पाँच वर्षों के बाद बंद हो गया।

2.आर्य ज्योति-(दिशा) आर्य समाज के सिद्धांतों तथा वैदिक धर्म के समाचारों को ही स्थान मिलता है।

3.ज्ञानदा (दिशा) गयाना एकमात्र उत्कृष्ट मासिक पत्र है।जिसके संपादक श्री.योगिराज शर्मा हैं।यह पूर्ण साहित्यिक पक्ष है।इसका प्रकाशन सायक्लोस्टाइल पद्धति से होता है।

इस प्रकार गयाना में हिंदी पत्रों की अस्मिता प्रेस की असुविधाओं के होते हुए भी सुरक्षित है।

त्रिनिदाद एवं टोबैंगो (वेस्ट इंडिज) :

वेस्ट इंडीज के नाम से जाना जानेवाला केरिबियन समुद्र में स्थित त्रिनिदार्द टोबैंगो एक देश है ,जिसमें भारतीय वंश के लोगों की काफी ज्यादा संख्या है।अन्य देशों की भाँति भारत से यहाँ पर भी गिरमिटिया (मज़दूर)के रूप में यहाँ लोग लाए गए थे।अन्य राष्ट्रों में जिस प्रकार हिंदी में पठर्न पाठन एवं लेखन चल रहा है उसी भाँति यहाँ पर भी सुचारू रूप से चल रहा है।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
त्रिनिदाद टोबैंगो	1.कोहिनूर अख़बार	भारतीय विद्या संस्थान के तत्वावधान में			इसमें धार्मिक सामग्री के अतिरिक्त कुछ स्थानीय समाचार भी प्रकाशित होते थे।	अब बंद है।
	2.ज्योति पत्रिका	प्रो.हरिशंकर आदिश संस्थापक/संपादक	मार्च 1968	मासिक	इसमें भारतीय संगीत के सूरों और लयों का परिचय दिया	हिंदी अंग्रेजी मिश्रित सर्वाधिक प्रसिद्ध पत्र।

					जाता है।	
	3.हिंदी परिचय हिंदी निधि पत्रिकाएँ	हिंदी निधि संस्था				
	4.आर्य संदेश	आर्य समाज जी.एल.मिश्र		मासिक		

इस राष्ट्र ने सर्वप्रथम हिंदी में 'कोहिनूर अख़बार'निकाला जो कुछ दिनों तक प्रकाशित होकर बंद हो गया।इस पत्र में भारतीय धार्मिक सामग्री के अतिरिक्त वहाँ के स्थानीय घटनाओं के समाचारों को भी प्रमुखता दी जाती थी।इसके उपरान्त 'ज्योति' पत्र का प्रकाशन प्रो.हरिशंकर आदिश के संपादन में मार्च 1968 में प्रारंभ हुआ।प्रारंभ में यह पत्र हिंदी संघ द्वारा प्रकाशित होता था परंतु आज हिंदी संघ के बंद हो जाने के कारण भारतीय विद्या संस्थान के मुखपत्र के रूप में प्रकाशित होता है।यह पत्रिका प्रत्येक महिने के सात तारीख को बिना कोई व्यवधान के प्रकाशित होती है। संस्थापक/संपादक प्रो.हरिशंकर आदिशजी ने इस पत्र को साहित्यिक पत्रिका बनाने का भरपूर प्रयास किया।इस काम में वे सफल भी हुए।इस पत्र में अन्य विषयों के अतिरिक्त संगीत शास्त्र की तकनीकी शिक्षा से संबंधित भी लेख प्रकाशित होते थे।इस देश में निवास करनेवाले भावी पीढ़ी को प्रकाशमान करनेवाली युवा पीढ़ी को एवं उनके साहित्य को अधिक मात्रा में प्रोत्साहन दिया जाता था।

त्रिनिडाड में हिंदी मुद्रणालय का अभाव था इसके कारण हिंदी की सामग्री के प्रकाशन से संबंधित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था।आजकल इस राष्ट्र में स्व.पं.काशीनाथ मिश्र का एक ही प्रेस है।इसमें टाईपिंग संबंधी अनेक असुविधाएँ होती थीं।जिसके कारण लेखकों को संघर्ष करना पड़ता था।इन अभावों के बाद भी डॉ.आदिश वहाँ पर पत्र पत्रिकाओं का दीप जलाएँ हुए निरंतर कार्यरत हैं।

दक्षिण अफ्रीका :

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
दक्षिण अफ्रीका	1.इंडियन ओपिनियन	प्रथम श्री.मनसुखलाल नाजर श्री.हर्बट किचन श्री.हेनरी एस्.एस्.पोलक	1903	साप्ताहिक	यह पत्र डरबन से 13 मील दूर फिनिक्स आश्रम से प्रकाशित श्री.मदनज्योत के प्रेम में मुद्रित होता	यह पत्र आज भी प्रकाशित हो रहा है।

					था। महात्मा गांधी का आशीर्वाद इसपर था।	
	2.हिंदी	श्री.भवानी दयाल संन्यासी	5 मई 1922	साप्ताहिक		
	3.धर्मवीर	श्री.भवानी दयाल संन्यासी	1912	साप्ताहिक		
	4.अमृतसिंधु	नेटाल से	1910	साप्ताहिक		
	5.संघसमाचार	डॉ.रामप्रसाद हेमराज	1948	साप्ताहिक	इसमें बच्चों को हिंदी की ओर प्रेरित करने के लिए आर्ल कोना स्तंभ भी रख गया था।	

इस प्रकार यहाँ आज तक हिंदी की धारा प्रवाहमान है।

बर्मा :

प्राचीनकाल में बर्मा यह धरती का टुकड़ा भारत का अभिन्न अंग था। लेकिन आज यह एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में प्रगति कर रहा है। यहाँ पर आज बहुत सारे प्रवासी भारतीय निवास करते हैं। यहाँ पर हिंदी के प्रचार प्रसार एवं विकास में पं.हरिवदन शर्मा एवं श्री.एल.बी.लाठिया का योगदान अविस्मरणीय है। यहाँ पर श्री.एल.बी.लाठिया ने सर्वप्रथम "बर्मा समाचार"प्रकाशनकर हिंदी पत्रकारिता की नींव डाल रखी।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
ब र्मा	1.बर्मा समाचार	श्री.एल.बी.लाठिया	1934			
	2.प्राची कलश प्राची प्रकाश	श्री.एल.बी.लाठिया अनंतराम मिश्र प्रथम सं.श्यामचरण मिश्र	1934 1934	दैनिक दैनिक		बंद हो गया
	3.प्रवासी	संपादक/प्रकाशक श्री.एल.बी.लाठिया श्यामचरण मिश्र		साप्ताहिक		बंद हो गया
	4.नवजीवन	श्री.रामप्रसाद वर्मा	1951	दैनिक		बंद हो गया

	5.जागृति	श्री.रामप्रसाद वर्मा	1951	दैनिक		बंद हो गया
	6.ब्रम्हभूमि	प्रकाशक श्री.ब्रम्हानंद संपादक श्री.रामप्रसाद वर्मा	1953	मासिक		नियमित रूप से प्रकाशित
	7.आर्ययुवक जागृति		1970	मासिक		बंद हो गया

आज वर्मा में केवल 'ब्रम्हभूमि'मासिक पत्रिका के प्रकाशन से ही हिंदी पत्रकारिता की ज्योति प्रज्ज्वलित हो रही है।

नेपाल :

भारत देश से अधिक नज़दिक का देश नेपाल है।इस देश में नेपाली राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग में लाई जाती है।भारत और नेपाल इन दोनों देशों के भाषा की लिपि देवनागरी है।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
नेपाल	1.नेपाली	श्री.उमाकांत दास	1956	दैनिक	राजनीतिक समाचारों की अधिकता कभी कभी हिंदी रचनाएँ भी प्रकाशित होती है।	प्रकाशन शुरू है।
	2.साहित्य लोक	डॉ.कृष्ण चंद्र मिश्र	1980 1979	मासिक	पूर्ण रूप से साहित्यिक पत्र	
	3.चर्चा आरोहण			लघुपत्र मासिक		कभी कभी प्रकाशित हो जाता है
	4.हिमालिनी	सं.डॉ.उषा ठाकुर		त्रैमासिक		प्रकाशन शुरू है
	5.नेपाल संदेश शारदा जनचेतना					प्रकाशन शुरू है

भारत देश के नेपाल की लिपि देवनागरी इतनी निकट होने के बावजूद भी जितनी मात्रा में नेपाल में प्रकाशन,पठर्न पाठन होना चाहिए था,उतना समाधानकारक रूप से नहीं हो रहा है।फिर भी उपर्युक्त पत्रों के आधार पर कह सकते हैं कि हिंदी की ज्योति और अस्तित्व जीवित है।

हॉलैंड ः

हॉलैंड को आज नीदरलैंड के नाम से जाना जाता है।इस राष्ट्र में आज सूरीनाम राष्ट्र से आए हुए कई प्रवासी भारतीय स्थायिक हो चुके हैं।प्रवासी भारतवंश के लोगों ने "लाला रूख" नाम की एक सजग संस्था की स्थापना कर दी है।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
हॉलैंड	1.लाला रूख	डॉ.जे.पी.कोलेश्वर सुपुल		मासिक	हिंदी और डच भाषा में प्रकाशित	
	2.आसन संदेश		1986			
	3.वर्तमान पत्र		1986			
	4.ओमवाणी				डच और हिंदी भाषा में प्रकाशित	
	5.संगठन	श्री.ओमप्रकाश सामवेदी		मासिक	25 वर्षों से निरंतर प्रकाशित	
	6.हिंदू			मासिक	चाहे पंथ अनेक है फिर भी हिंदू एक है।	हिंदी और डच भाषा में एक साथ निकलता है।
	7.दिव्य संदेश			मासिक	आर्य समाज के प्रचार्र प्रसार की भरपूर सामग्री छपती है।	
	8.देहनाग से ऐसा समाचार		1980	मासिक		आज भी प्रकाशन निरंतर हो रहा

						है।

इंग्लैंड :

अँग्रेज़ी सरकार ने भारत पर लगभग 150 वर्षों तक राज किया। इस देश में अनेक भारतीय लोग शिक्षा अर्जन हेतु जाते थे। आज भी निरंतर प्रवाह शुरू है। इस देश में अन्य देशों की अपेक्षा सर्वप्रथम सन् 1883 में पत्रों का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
इंग्लैंड	1.हिंदोस्थान	राजा रामपाल सिंह	1883	त्रैमासिक	हिंदी,उर्दू ,अँग्रेज़ी में निकलता था।	
	2.वैदिक पब्लिकेशन				आर्य समाज का मुख पत्र प्रकाशित हुआ।	
	3.प्रवासिनी	स्व.धर्मेंद्र गौतम	1964	त्रैमासिक	कई महत्त्वपूर्ण विशेषांक स्तरीय सामग्री से परिपूर्ण थे।	
	4.नवीन पीकली		1925			
	5.अमरदीप	श्री.जे.एस्.कौशल	23 मार्च 1971	साप्ताहिक		
	6.हिंदी	श्री.प्रेमचंद सूद	जुलाई 1990	त्रैमासिक		
	7.सर्जन	ज्योति प्रिंटर्स से प्रकाशित	1967		हिंदी और गुजराथी में प्रकाशित	
	8.आर्यसंदेश			मासिक		
	9.पुरवाई	पद्मेश गुप्ता सहसंपादिका श्रीमती उषा राजे सक्सेना		मासिक	एक दशक से प्रकाशित	
	10.वर्तमान राष्ट्रकुल	कॉमनवेल्थ ऑफ नेशंस के बैनर तले				निरंतर शुरू

	11. आर्य पत्रिका	आर्य समाज लंदन द्वारा प्रकाशित				निरंतर शुरू

कॅनडा :

इंग्लैंड की सरकार के अधिपत्य से भारत स्वतंत्र होने के उपरांत कनाडा में प्रवासी भारतीयों की संख्या में वृध्दि हुई थी।जिसके कारण कॅनडा में हिंदी का प्रचार्र प्रसार के सार्थ साथ प्रकाशन भी हो रहा है।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
कॅनडा	1.हिंदी संवाद	श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी				
	2.हिंदी चेतना	डॉ.सुधा ओम ढींगरा	1982			
	3.पसुधा	श्रीमती स्नेह ठाकुर	1967			
	4.जीवनज्योति	श्री.हरिशंकर अदिश	नवंबर 1982		यह पत्रिका मूल रूप से संगीत एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर केंद्रित रहती है।	नई आशा,उमंग एवं पवित्र लक्ष्य लेकर प्रकाशन हिंदी और भारतीय संस्कृति का गौरवमय प्रकाशन।
	5.भारती	श्री.त्रिलोचन सिंह गिल	1975	मासिक	फोरोस्टेर पद्धति से इस पत्र का मुद्रण होता है।	हिंदी एवं अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं में सामग्री
	6.विश्वभारती	रघुवीर सिंह		पाक्षिक	राष्ट्रभाषा हिंदी एवं भारतीय संस्कृति की संवाहिका के रूप में विख्यात।	
	7.संगम			पाक्षिक		
	8.कर्तव्य					
	9.आर्यपत्रिका	श्रीमती मधु पार्ष्णेय				

रूस :

रूस की वर्तमान स्थिति अच्छी नहीं है क्योंकि वह अनेक भूखण्डों में विभक्त हो चुका है। यहाँ पर हम संपूर्ण रूप को केंद्र में रखकर ही पत्र एवं पत्रिकाओं का वर्णन करेंगे। सबसे पहले सन् 1802 में गेरासिस ने पिट्सबर्ग में एक प्रेस की स्थापना की। जिसमें संस्कृत,हिंदुस्तानी और बंगाली भाषा में निरंतर छपाई होती थी।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
रूस	1.नीक	डॉ.पी.ए.वासान्निकोव	1802		नीक अवधी भाषा का है,जिसका अर्थ है 'अच्छ'। वासान्निकोव रामचरितमानस के मर्मज्ञ थे। इसमें भारतीय सिनेमा पर सामग्री प्रकाशित होती थी।	इसे रूस के सैकड़ों लोग पढ़ते थे। भारतीय सिने कलाकारों की कहानी ,गीत प्रकाशित होते थे। इसके कुल तीन अंक निकले थे।
	2.सोवियत संघ	श्री.निकोलाई ग्रिवायोव	1972	मासिक	यह सचित्र पत्र है। इसमें सोवियत से संबंधित अनेक लेख प्रकाशित होते रहते थे।	यह पत्र हिंदी के अतिरिक्त संसार की 20 भाषाओं में एक साथ प्रकाशित होता है।
	3.सोवियत नारी	व.ई.फेदोतोवा श्री.ई.पा.गोलुबेन (हिंदी संस्करण के संपादक)	1972	मासिक	इसमें सोवियत नारी जीवन का सचित्र चित्रण होता है।	20 भाषाओं में प्रकाशित
	4.भारतभूमि	प्रसन्न वर्मा,दिनेश	1995	मासिक		प्रकाशन

		त्रिपाठी,सुजीत बनर्जी				जारी
	5.दीवार					
	6.पोस्तोद (पूरब) बुलेटिन					
	7.सोवियत दर्पण	शोवियत दूतावास से प्रकाशित				
	8.युनोस्त,युवक दर्पण,सोवियत भूमि,दस्तावेज		1955	मासिक	सोवियत में लोकप्रिय पत्र	दुनिया में गैर दिलचस्प व्यक्ति कोई नहीं।

चीन :

दुनिया में चीन लोकसंख्या की दृष्टि से प्रसिद्ध राष्ट्र है।आज चीन में हिंदी को लेकर विद्यार्थियों में क्रेज़ है।लेकिन उस संबंध में हमारे सामने पुक्ता जानकारी नहीं है। चीन में आज चीन संबंधी विविध प्रकार की जानकारी संपूर्ण संसार को बताने हेतु "चीन सचित्र" नामक एक हिंदी मासिक 1957 से उत्कृष्ठ,रंगीन पत्रिका में निकलती है।इसका प्रकाशन लगभग 19 भाषाओं में एक साथ बिजिंग से हो रहा है।आज तक हिंदी में इसके 326 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।

जापान :

जापान वैज्ञानिक प्रवीणता के लिए दुनिया में प्रसिद्ध है।यह ज्वालामुखियों का देश है।अन्य देशों में जिस प्रकार हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है,उसी प्रकार यहाँ भी निरंतर शुरू है।भारत और जापान का प्राचीन काल से सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संबंध है।बौध्द धर्म का उदय भारत में हुआ लेकिन भारत से वह निष्कासित हो गया लेकिन जापान में उसे आश्रय मिला।इस कारण भी इन दोनों देशों का पारस्पारिक ,भावनात्मक संबंध होने के कारण वहाँ के लोग हिंदी सीखते हैं।

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	सन्	प्रकार	दिशा	दशा
जापान	1.अंक		1964			12 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
	2.सर्वोदय				भारत जापान मित्रता संघ धार्मिक पत्र है।हिंदी संबंधी सामग्री	यह पत्र जापानी से अनुदित होकर प्रकाशित होते हैं।
	ज्वालामुखी	श्री.योशिआकि	1980		जापान का प्रथम	1980 में प्रथम अंक

		सुजुकि			हिंदी पत्र। ज्वालामुखी की तरह सदैव हम भी क्रियाशील रहें इसलिए इस शीर्षक की सार्थ कता। इसके साथ ही ज्वालामुखी की गतिशीलता हमारे जीवन में बनी रहे तभी दोनों साहित्य को गति दे पायेंगे। यह संपूर्ण साहित्यिक पत्र था।	प्रकाशित अब तक इसके दो अंक। हिंदी के माध्यम से जापानी साहित्य का परिचय,जापानी साहित्य का अनुवाद,जापानी एवं हिंदी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन,जापानी संस्कृति का परिचय इसके कारण भारत के लोगों को इसका लाभ होगा। पत्रिका का नामकरण फुजि पर्वत की भव्यता को लेकर किया गया है। प्रकाशन बंद हो गया।

अमेरिका :

अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति 18 अक्तूबर 1980 में डॉ.कुँअरचंद्र प्रकाश सिंह के संस्थापक में वर्जिनिया में इसकी स्थापना हुई। इसी समिति के तत्वावधान में "विश्व" त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के प्रथम संपादक श्री.रंजन कुमार सिंह थे। इसके कई अच्छे विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। हिंदी को विश्वस्तरीय बनाने में इस पत्र ने प्रमुख भूमिका अदा की। यह पत्र हिंदी साहित्य एवं भाषा,संस्कृति पर ही केंद्रित थी। आज न्यूयार्क से "संवाद-सूत्र" त्रैमासिक पत्र भी निकल रहा है। सन् 1984 जनवरी में हिंदी साहित्य सभा के तत्वावधान में "भारतीय" पत्रिका प्रकाश में आई । सन् 1984 से "इलियाना" से "भारती" द्वैमासिक पत्र निरंतर प्रकाशित हो रहा है। इस राष्ट्र से ही "गदर की गूँज" पत्रिका का प्रकाशन हो चुका है। यह सूचनात्मक एवं सामाजिक पत्र माना जाता है। सन् 1947 में "यूनेस्को कूरियर" का हिंदी संस्करण निरंतर प्रकाशित होता है।

नॉर्वे :

नॉर्वे से सन् 1979 में "परिचय" द्वैमासिक पत्र का प्रकाशन हुआ था। इसके संपादक श्री.सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक थे। कुछ दिनों के उपरान्त यह पत्र 'स्पाइल दर्पण" के नाम से प्रकाशित हो रहा है। इसमें हिंदी साहित्य के सार्थ साथ नॉर्वे के भी हिंदी समाचार प्रकाशित होते हैं। सन् 1990 में "शांतिदूत"त्रैमासिक पत्र अमित जोशी के संपादन में प्रकाशित होता है। कैलाशराय के संपादन में "त्रिवेणी" द्वैमासिक पत्र प्रकाशित होता है। "साप्रवासी टाइम्स" हिंदी -पत्र कभी-कभार प्रकाशित होता है।

अन्य देश :

देश	पत्रिका का नाम	संपादक का नाम	प्रकार
1.अबु धाबी	निकट	कृष्ण बिहारी	त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
2.शारजहाँ	अभिव्यक्ति अनुभूति	श्रीमती पूर्णिमा बर्मन	
3.हंगेरी	दिन पत्रिका	सं.लायोश मङ्गरी श्रीमती इवा असादी	
4.श्रीलंका	सुगृहिणी	वेंकटलाल ओझा श्रीमती हेमंत कुमारी	मासिक
5.तिब्बत	तिब्बत बुलेटिन तिब्बत समाचार		मासिक
6.न्यूज़ीलैंड	सागरिका		

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत से बाहर विश्व में अनेक देशों में हिंदी पर्त्र पत्रिकाओं के जितने साधन उपलब्ध है उन साधनों के आधार पर निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। ये पत्रिकाएँ हिंदी का परचम संपूर्ण विश्व में फैला रही हैं। इस शोध से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि आज कई पर्त्र पत्रिकाएँ काल के गर्त में कालकवलित हो गए हैं। कुछ आज भी नई ऊर्जा,नया उत्साह संपूर्ण विश्व में प्रकाशित कर रहे हैं।

संदर्भग्रंथ :

1.अंतरजाल का सहयोग
2.विश्व हिंदी पत्रिर्का सर्न् 2014,2010,2009,2011,2012
3.भूमंडलीकरण : साहित्य ,समाज ,और संस्कृति- डॉ.शशिभूषण कुमार।